पाठ 12

दक्षिण भारत
(छठी से ग्यारहवीं शताब्दी)
दक्षिण भारत के कुछ राज्य

प्रारम्भ में दक्षिण भारत में मात्र तीन राज्य ही थे- चेर, चोल और पांड्य। छठी से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य यहाँ राष्ट्रकूट, चालुक्य, पल्लव राज्य भी हुए। मानचित्र में देखकर इनसे सम्बन्धित शासकों के नाम व समय अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

इन राज्यों में अपनी-अपनी प्रभुसत्ता को स्थापित करने के लिए निरन्तर संघर्ष होते रहते थे।

जलमार्ग से व्यापार

आय के स्रोत-व्यापार व कृषि

युद्धों के कारण ये राज्य कमजोर तो अवश्य हुए किन्तु अपने प्राकृतिक संसाधनों एवं व्यापार से बहुत लाभ उठाते रहे। दक्षिण पूर्व एशिया से इनके अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध थे। प्राचीन काल में ये लोग यूनान, रोम व मिस्र के साथ दूसरी ओर मलय द्वीप समूह के साथ तथा वहाँ से चीन के साथ व्यापार करते थे।
इनका प्रमुख बन्दरगाह महाबलीपुरम् था जो स्थानीय व सुदूर व्यापार के कारण राजकोष की आय के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था। नदियों के तटीय इलाकों में धान व गन्ना की उपज होती थी।

कला-साहित्य को बढ़ावा

भरतनाट्यम की नृत्य मुद्राएँ

क्रोधित हँसी सोचते हुए दुःखी

व्यापार और कृषि की आय से राजाओं ने व्यापक रूप से मंदिरों का निर्माण कराया। मंदिरों के निर्माण में राजाओं की विशेष रुचि थी। हिन्दू धर्म के विभिन्न पंथों के हिन्दू, वैष्णव व शैव राजाओं ने अपनी-अपनी मान्यताओं के देवी-देवताओं के सम्मान में मंदिर बनवाए। ये बड़े व भव्य मंदिर ठोस चट्टानों को काट-काट कर निर्मित किए गए थे। इनके शिखर आयताकार, ऊँचे एवं कई मंजिलों के होते थे। मंदिरों की दीवारों पर सुन्दर-सुन्दर मूर्तियाँ बनाई जाती थीं। एक राजा द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य को उनके वंशजों द्वारा पूरा किया जाता था।

उस समय उत्तर भारत में इस प्रकार के मन्दिरों के निर्माण नहीं हुए थे।

 चालुक्य राजाओं द्वारा बनाया गया वातापी का विरूपाक्ष मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है

विरूपाक्ष मन्दिर

पल्लवों द्वारा चेन्नई के पास महाबलीपुरम् में बने रथ मन्दिर को एक पत्थर को काटकर बनाया गया है।

महाबलीपुरम् का एक रथमंदिर

 राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एलोरा में कैलाश मन्दिर विशाल चट्टान को काटकर बनवाया। यह कई मंजिलों का हैं।

कैलाश मंदिर का भीतरी दृश्य, एलोरा

चोल राजाओं ने तंजौर में 14 मंजिलों वाला बृहदेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया। इस समय की मूर्ति कला भी बहुत विकसित थी। इस मन्दिर में धातु की बनी नटराज की सुन्दर मूर्ति स्थापित है।

साहित्य की प्रगति

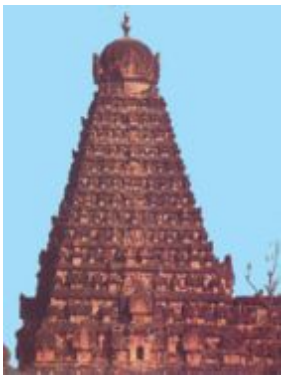

बृहदेश्वर मन्दिर

दक्षिण भारत के राजा शिक्षा व साहित्य के प्रेमी थे। अतः दक्षिण भारत में संस्कृत व तमिल के अलावा अन्य स्थानीय भाषाओं जैसे कन्नड़ की भी पर्याप्त उन्नति हुई। पल्लव शासकों के समय में संस्कृत भाषा की विशेष उन्नति हुई। कांचीपुरम पल्लवों की राजधानी होने के अलावा तमिल और संस्कृत के अध्ययन का केन्द्र भी था। महान संस्कृत कवि दण्डी पल्लव राजा नरसिंह वर्मन द्वितीय की राजसभा में थे। चोल शासकों के समय में तमिल भाषा की विशेष उन्नति हुई। कम्बन द्वारा लिखित 'रामायणम्' ग्रन्थ तुलसीकृत रामचरितमानस की भाँति दक्षिण में लोकप्रिय है। इनके समय में जैन एवं बौद्ध विद्वानों ने भी ग्रन्थ लिखे।

नटराज की मूर्ति

धार्मिक स्थिति

दक्षिण भारत के शासक हिन्दू धर्म को मानने वाले थे, वे अन्य धर्मों के प्रति भी उदार थे। वे बौद्ध एवं जैन धर्म के विहारों तथा मन्दिरों के निर्माण हेतु भी दान दिया करते थे। समाज में विष्णु तथा शिव की पूजा विशेष रूप से होती थी। शंकराचार्य ने उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम क्षेत्रों में मठों की स्थापना की। इन्होंने आत्मा और परमात्मा को एक बताया। ग्यारहवीं शताब्दी में दक्षिण के रामानुजाचार्य ने शक्ति और ज्ञान को ईश्वर प्राप्ति का साधन बताया।

सामाजिक स्थिति

दक्षिण भारत का समाज भी वर्ण व्यवस्था पर आधारित था। इस समय समाज में दो वर्ग-ब्राह्मण व गैर ब्राह्मण ही थे। सभी अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते थे। समाज में स्थिरता थी। राज्य में धनी और गरीबों में अन्तर था। धनवान व्यक्तियों के मकान सुन्दर एवं सुसज्जित होते थे। गरीबों के घर सादे होते थे और कच्चे फर्श के होते थे। किसान भूमि के स्वामी माने जाते थे परन्तु मजदूरों की दशा अच्छी न थी। कृषि मजदूर दासों की तरह ही थे।

शासन व्यवस्था

दक्षिण भारत के राज्यों की शासन व्यवस्था में राजा ही सर्वोपरि होता था। राजा की सहायता के लिए मंत्री तथा कर्मचारी होते थे। उन मंत्रियों और कर्मचारियों की नियुक्ति राजा स्वयं करता था। इस प्रकार उन मंत्रियों और कर्मचारियों पर उनका नियंत्रण रहता था।

चोलों की शासन प्रणाली बहुत विकसित और सुव्यवस्थित थी। समस्त साम्राज्य को 'राष्ट्रम' कहते थे। प्रान्तों को 'मण्डलम', जनपद को 'नाडु' तथा गाँवों को 'कुर्रम' कहा जाता था। कुर्रमवासी अपनी बैठकों में समस्याओं का समाधान करते थे। वे सिंचाई के लिए तालाब बनवाते थे, कर वसूलते थे। ये आर्थिक रूप से स्वावलम्बी थे। यहीं से स्थानीय स्वशासन यानि आज से मिलती-जुलती पंचायती राज की शुरुआत हुई।

अपने गाँव की दो समस्याओं को कॉपी में लिखिए-

गाँव स्तर पर इन समस्याओं का समाधान कौन और कैसे करता है ?

दक्षिण भारत का विदेशों से सम्पर्क

चोल वंश के राजा राजेन्द्र चोल प्रथम के पास बहुत बड़ी जलसेना थी जिसकी सहायता से उन्होंने दक्षिणी पूर्वी एशिया के भू-भागों-लंका, निकोबार द्वीप, मलाया तथा मलाया द्वीप समूहों में अपने सम्पर्क बनाए। इस समय भारत के कुछ व्यापारी पड़ोसी देशों में गए जिन्होंने वहाँ बस्तियाँ बनाईं। कुछ बौद्ध प्रचारक भी पहुँचे। विदेशों के स्थानीय लोग इनसे प्रभावित हो भारतीय विचार, कला व रीति-रिवाज अपनाते गए।

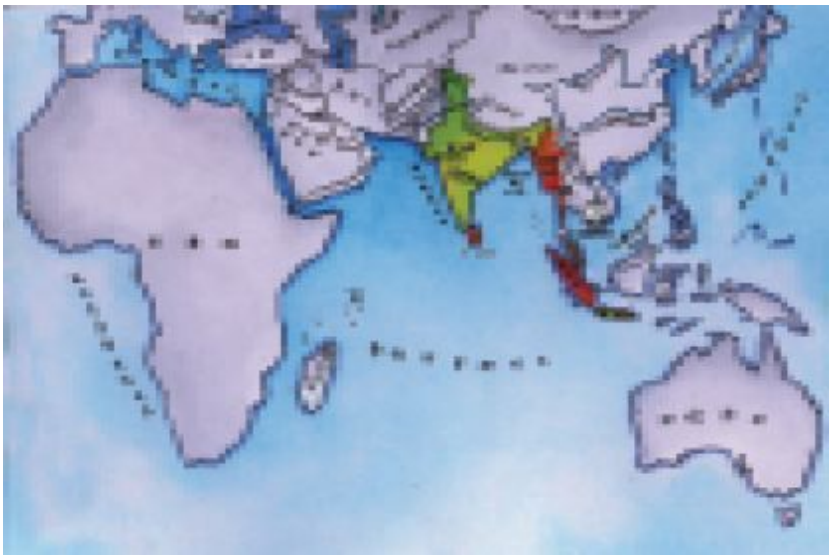

इसी प्रकार पल्लवों ने सुमात्रा में अपनी बस्तियाँ स्थापित कीं, जो भारतीय संस्कृति के प्रसार के महत्वपूर्ण केन्द्र बन गए। कम्बोज (कम्बोडिया) और चम्पा, जिसके शासक शैव थे, ने कम्बोज को संस्कृत भाषा का केन्द्र बनाया और असंख्य लेख संस्कृत भाषा में लिखवाए। भारतीय, स्थानीय लोगों के साथ घुल-मिल गए जिससे भारतीय कला, साहित्य भाषा का फैलाव हुआ। आज भी एक सफल मिश्रण स्थानीय संस्कृति में दिखाई देता है।

इण्डोनेशिया में आज भी रामायण की कहानी इतनी लोकप्रिय है कि वहाँ की जनता इस पर आधारित लोक नाट्य खेलती है। इण्डोनेशिया भाषा में आज भी कई संस्कृत के शब्द हैं।

मानचित्र के आधार पर बताइए कि छठीं से आठवीं शताब्दी में भारत का किन-किन देशों से व्यापार होता था ?

रामायण आधारित लोकनाट्य करते हुए लोग

बोरोबुदूर का बौद्ध मन्दिर अंकोरवाट का मन्दिर

कम्बोडिया स्थित अंकोरवाट का मन्दिर बोरोबुदूर के मन्दिर से भी बड़ा है। यह मन्दिर विश्व की धरोहर है। इस मन्दिर की दीवारों पर रामायण-

महाभारत की कहानियाँ उभरी हुई मूर्तियों में अंकित हैं|